विद्यापति गोष्ठी आ किरणजी

डॉ. अतुलेश्वर झा
सहायक प्राध्यापक, मैथिली विभाग, हरि प्रसाद साह महाविद्यालय, निर्मली, सुपौल, बिहार, भारत

Corresponding Author: *डॉ अतुलेश्वर झा

DOI: https://doi.org/ 10.5281/zenodo.23118142

सारांश

मिथिलाक साहित्यिक आ सांस्कृतिक इतिहासमे सरिसवक विद्यापति-गोष्ठीक स्थान विशिष्ट रहल अछि। ई गोष्ठी केवल महाकवि विद्यापतिक स्मरण अथवा हुनकर पदावलीक गायन-व्याख्यापर केन्द्रित साहित्यिक आयोजन नहि छल, बल्कि एकर पाछाँ मैथिली भाषा, साहित्य आ सांस्कृतिक चेतनाक व्यापक उद्देश्य सक्रिय छल। विशेष रूपसँ ग्रामीण परिवेशमे साहित्यिक गोष्ठीक आयोजन कऽ सरिसवक गोष्ठी साहित्यकेँ अभिजात बौद्धिक परिसर सँ निकालि सामान्य जनजीवन, विद्यार्थी आ नवपीढ़ीक बीच पहुँचाबयमे महत्वपूर्ण भूमिका निभौलक। सरिसबक विद्यापति-गोष्ठीक विशेषता एकर परम्परा आ आधुनिक चेतनाक समन्वयमे निहित छल। एक दिस ई गोष्ठी विद्यापतिक साहित्यिक विरासतकेँ जीवित रखबाक काज करैत छल, तँ दोसर दिस मैथिली भाषाप्रति गौरव, अपनत्व आ सामुदायिक चेतना विकसित करैत छल। डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क संस्मरणमे सेहो सरिसवक विद्यापति-गोष्ठीकेँ मैथिली-विकासक महत्वपूर्ण संस्थाक रूपमे देखाओल गेल अछि तथा ग्रामीण क्षेत्रक छात्रसभमे मैथिलीप्रति प्रेम जागृत करबाक एकर प्रभावक संकेत भेटैत अछि। एहि कारण सरिसवक गोष्ठीकेँ मात्र एकटा स्थानीय साहित्यिक कार्यक्रम मानब ओकर वास्तविक महत्त्वकेँ सीमित करब होयत। वस्तुतः ई मैथिली भाषिक अस्मिता, साहित्यिक जनजागरण आ सांस्कृतिक पुनर्चेतनाक एक सक्रिय केन्द्र छल, जाहि ठाम विद्यापतिक स्मृति माध्यम बनि मैथिली समाजक वर्तमान आ भविष्यक प्रश्नसभसँ जुड़ैत छल। एहि परिप्रेक्ष्यमे सरिसवक विद्यापति-गोष्ठीक अध्ययन मैथिली साहित्यक संस्थागत इतिहास तथा आधुनिक मैथिली आन्दोलनक विकासकेँ बुझबाक लेल विशेष रूपसँ प्रासंगिक बुझाइत अछि।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 3139-9851
- **Received:** 20-08-2026
- **Accepted:** 16-09-2026
- **Published:** 03-10-2026
- **IJCATM:**1(3); 2026: 38-40
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes
- **Paper type:** Review Paper

How to Cite

डॉ. अतुलेश्वर झा. विद्यापति गोष्ठी आ किरणजी. Int. J. Current Acad. Trend. Multi. 2026;1(3):38-40

Access this Article Online

www.ijcatmjournal.com

मुख्य शब्द: विद्यापति ,विद्यापति गोष्ठी ,किरणजी , मैथिली साहित्य , साहित्यिकी चेतना , मैथिली काव्य ,प्रकाशन , साहित्यिकी योगदान ।

© 2026 डॉ अतुलेश्वर झा, this is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

किरणजीक जन्म दरभंगा जिलाक प्रसिद्ध गाम उजानक धर्मपुर टोलमे भेल छलन्हि। हिनक बास जाहिठाम छल ओहिठामक परिसर मैथिली साहित्यक लेल बहुत विशिष्ट छल। हिनक जेष्ठ भ्राता काशीनाथ झा मैथिली, हिन्दी, संस्कृत ओ अंग्रेजीक ज्ञाता संग अनुवादक ओ कथाकार छलाह। किरणजीक घरक सटले आचार्य रमानाथ झा ओ तंत्रनाथ झा अर्थात दुनू सहोदरक बास छलन्हि। किरणजी आचार्य रमानाथ झासँ किछुए मासक छोट छलाह। रमानाथ झाक जन्म २१ सितम्बर १९०६ ई. मे तँ किरणजीक जन्म १ दिसम्बर १९०६ ई. मे भेल छलन्हि किन्तु हुनकर मित्र रहथिन्ह तंत्रनाथ बाबू। तंत्रनाथ बाबूक संग बेसी रमैत छलाह। ओहि समयमे ई गीतक रचना करैत छलाह। अपन ओहि गीत रचनाक संबंधमे किरणजी कहैत छथि- " बहुतो गीत रचलहुँ जे एखन धरि राखल अछि। आब अक्षर उखड़य लगलैक। गीत सभ भक्ति ओ श्रृंगार विषयक रहबाक कारणेँ आब रहत तँ ओ कापिए मे मुदा (ओ सभ मैथिली साहित्यक संग सम्बन्ध सुदृढ़ ओएह कयलक)" [1] ओना किरण साहित्य शोध संस्थान, उजान आब ओकरा प्रकाशित क' देलक अछि। से कोन उद्देश्यसँ कहब कठिन अछि। किरणजी जखन बनारस गेलाह ओहिठाम हिनक चेतना सम्पूर्ण रूपसँ लोक पक्षीय भ' गेल। यैह कारण छल जे ओ श्रृंगार आ भक्ति रचना प्रायः प्रकाशित नहि कर' चाहैत छलाह। बनारसमे किरणजी यात्रीजीक संग विद्यापति पर्व मनौने छलाह। किरणजी स्वयं कहैत छथि- " १९३१ई. देवउठान एकादशी दिन साँझखन बेणीमाधवक दर्शन कऽ कऽ घुरल एक विद्यार्थी एकटा कागजक एक डेढ़ वर्ग इंचक टुकड़ा देलनि जाहिमे लिखल रहैक-

कातिक धवल त्रयोदशी जान।
विद्यापतिक आयु अवसान।।
विद्यापति जयन्ती मनायब?

ककरा, के, कहिया, कृत्य सँ लिखलक तकर कोनो संकेत नहि। अक्षरक परिचये आधार। काशीक समस्त मैथिल एकत्रित भ' मिथिला मैथिलीक जयगान करताह- एहन अवसरकेँ आन्दोलनकर्त्ता कोना छोड़ैत? तैं मनायब मे प्रश्न चिन्हक अर्थ की?" [2] एकर बाद किरणजी जत' रहलाह विद्यापति पर्व मनबैत रहलाह। कलकत्ता गेलाह तँ ओहूठाम यात्रीजी संग छलखिन्ह। एहि तरहेँ किरणजी १९३० ई. मे बनारस आयल छलाह। ओहिठाम ओ ओहि वातावरणमे ओ सम्पूर्ण रूपसँ मैथिलीक कार्यमे लागि गेलाह। ओ अपना विषयमे कहैत छथि- "१९३० ई. ओ समय छल जखन हम मैथिलीक क्षेत्रमे आबि गेलहुँ। स्वराजक आन्दोलन चलि रहल छल। हम ओहिमे प्रवेश क' गेलहुँ त' हमर जेठ भाइ लोकनि हमरा काशी पठा देलनि। ओत' दुनू काज चलैत छलैक। हड़तालो होइक, जुलुसो बहराइक आ अपन-अपन भाषा साहित्यक काज सेहो होइक। मराठी, मलयालम आदि भाषाक साहित्य परिषद् वार्षिक सम्मेलनमे बड़ उल्लासँ लोक भाग लीअय। हम पता केलियैक त' बुझायल जे मैथिलीक ने कोनो संस्था अछि एहिठाम आ ने मैथिली स्वीकृते अछि। हमरा हृदय पर एक चोट लागल। ओएह अपमान बोध हमरा मैथिलीक क्षेत्रमे प्रवेश करा देलक। [3] एहि रूपेँ किरणजी मैथिलीक आन्दोलन,पत्रिका ओ पोथीक सम्पादन ओ प्रबंधनमे जुटि गेलाह। ध्यातव्य अछि जे १९४० ई. मे हिनकहिं सम्पादनमे प्रबोध नारायण चौधरीक "बिछल फूल" कथा संग्रह प्रकाशित भेल जे मैथिलीक पहिल कथा संग्रह थिक। एहि तरहें बनारस विश्वविद्यालयमे मैथिलीक पढ़ाइक स्वीकृति संग बहुतों काज हिनका द्वारा भेल। स्वयं हुनक उपन्यास ओ बाल कथाक प्रकाशन संग विभिन्न विधामे हिनक कथा, कविता आदि प्रकाशित भेलन्हि। पत्नीक अस्वस्थताक कारण किरणजीकें चन्द्रावली औषधालयक सेवा छोड़' पड़लन्हि। १९४७ ई. मे गाम चलि अयलाह आ सरिसब-पाहीमे अपन वैदागिरीक काज कर' लगलाह। किन्तु हिनकर मन तँ शरीर स्वस्थ्यता सँ बेसी मोनक स्वस्थ्यता दिश छल। हिनक मानब छल जावत् मानसिक रूपसँ लोक जागृत नहि हैत समाजमे समताक वातावरण नहि तैयार हैत तावत् मिथिला भूमिक लोक स्वस्थ्य नहि भ' सकैत अछि। एहि स्वस्थ्यताक लेल आवश्यक अछि अपन भाषाकें आगू बढ़ायब। वेदागिरी संग- संग मैथिली आन्दोलनक गतिमे लागि गेलाह। ओहि समयमे दरभंगामे मैथिली साहित्य परिषद् संस्था छल जे मैथिली क्षेत्रमे बहुतो काज कयलक। ओ संस्था २८-२९ दिसम्बर १९४७ ई. कैं बड़गोरिया ड्योढ़ी पर महा अधिवेशन कयलक। जाहिमे मैथिलीक विभिन्न विद्वान आ साहित्यकार उपस्थित भेलाह। ओहि अधिवेशनमे डॉ कांचीनाथ झा ' किरण' सर्वसम्मतसँ प्रधानमंत्री चयनित भेलाह। ओहि संस्थासँ हिनका द्वारा बहुतो काज भेल। २२ जनवरी १९४८ई. मे ई लक्ष्मीश्वर एकेडमी सरिसबमे शिक्षक नियुक्ति भेलाह। शिक्षक रूपमे लोकप्रियता बढ़ल आ ओहि साल १४-११-१९५८ई. (कार्तिक धवल त्रयोदशी) कैं ई विद्यापति गोष्ठी सरिसब-पाहीक स्थापना कयलन्हि। एहि प्रसंग ओ स्वयं कहैत छथि- "१९४८ई. क त्रयोदशीकें सरिसबमे विद्यापति गोष्ठी स्थापित कए विद्यापति पर्वक आयोजन कयल। अपन भरि प्रयास कयल लोक संग्रहक, मुदा अयलाह भट्टपूराक प. बुद्धिनाथ झा, श्री मोतीनाथ झा, कथाकार श्री मनमोहन झा, स्व. झक्खन झा आ हम। १९४९ई. मे किछु संख्या बढ़ल। कविशेखर बदरीनाथ झा अध्यक्षता कयलन्हि। पचासो इसवीक यैह हाल रहल। ५१ई. मे परिषदक सहायक मन्त्रीक सुझाव पर स्मृति-सप्ताह मनयबाक निर्णय भेल। यदि दशो व्यक्ति उपस्थित होयताह तँ सत्तरि व्यक्तिक कानमे सन्देश पहुँचैत, यैह छल दृष्टि। दरभंगाक सप्ताह कार्यक्रममे एक दिन विसफी यात्रा छल।" [4] पहिल साल मात्र सरिसब-पाहीमे विद्यापति पर्व मनाओल गेल छल। एहि गोष्ठीक स्थापनाक मूल उद्देश्य छल अपन भाषाक प्रति समाजकें जगायब। किरणजीक कहब छल जावत् सम्पूर्ण समाज नहि जागत अपन भाषाक उन्नतिक लेल नहि सोचत तावत् मैथिलीक विकास नहि भ' सकैत अछि। तैं विद्यापति गोष्ठी सरिसब-पाहीक गतिविधि पूरा परिसर भ' गेल। दोसर साल यथार्थ १९४९ई. मे सात गाममे विद्यापति गोष्ठी मनेबाक कार्यक्रम बनल। ओहि कार्यक्रममे कविता आ गीतक पाठ होइत छल। क्रमशः नव रचनाकार जुटैत गेलाह आ कार्यक्रमक गति आगू बढ़' लागल। उक्त गोष्ठी अपन प्रकाशन समिति सेहो बनौलक। एहि समिति द्वारा 'संचयिता' (कथा संग्रह), 'प्रतिबिम्ब' (अनुवाद कथा संग्रह), 'कंठहार' (नाटक- मणिपद्मक) आ १९८२ई. मे जगदीश मिश्रक सम्पादनमे 'जिजीविषा' नामक कविता संग्रह प्रकाशित भेल। अपन आलोचनाक पोथी ' विश्लेषण ' में डॉ शिवशंकर श्रीनिवास लिखैत छथि - "कहल गेल अछि जे महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर परतंत्र भारतमे भारतीय साहित्यकारक जे मनोबल झुकि गेल छलैक ओकरा ओ पुनः ठाढ़ कयलनि। पश्चिमी साहित्य समक्ष जे आत्महीनताक भावना छलैक से समाप्त भ' गेल। तहिना विद्यापति गोष्ठी अपन वैचारिक दृढ़ताक संग मैथिलीक कार्य करबामे जे लोकक संकोच छलैक ओकरा दूर कयलक। स्थिति ई छलैक जे लोक साहित्यिक रचना कयनिहार के बगदल मगजक मानय छल। समाजमे जाहि

© 2026 डॉ अतुलेश्वर झा, this is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

वर्गकें धनक बदौलति मर्यादा ओ प्रतिष्ठा भेटैत छलैक ओ साहित्यकारक प्रतिष्ठाक भविष्य देखि चिन्तित भ' उपहास कर' लागि गेल। विद्यापति गोष्ठी एकरा दूर कयलक। रचनाकारक सम्मान हेतु प्रशस्त खोलि देलक। रचनाकारक स्वाभिमान पूर्णतः जागि आएल।" [5] एहि गोष्ठीक चलेबाक लेल एकटा मंत्री आ अध्यक्ष होइत छलाह। समय-समय पर ओ पद बदलैत रहल। १९५३ ई. मे अध्यक्ष कविशेखर बदरीनाथ झा ओ मंत्री कुंजनाथ झा रहथि। १९५९ ई. मे प्रोफेसर सुशील झा एकर मंत्री भेलाह। क्रमशः एहि गोष्ठी संग बहुतो गोटा जुड़लाह जाहिमे पं. बुद्धिनाथ मिश्र, कविशेखर बदरीनाथ झा, मोतीनाथ झा, महावैयाकरण दीनबन्धु झा, श्री कुंजनाथ झा, पं. रमानाथ मिश्र, पुष्कर झा, मधुसूदन मिश्र, पं. भवनाथ झा, पं. ठक्कन झा, जीतेन्द्र नारायण झा, अम्बिका नाथ मिश्र, मनमोहन झा, कथाकार मनमोहन झा, यंत्रनाथ झा, दीपकजी, प्रमोद झा 'पथिक', धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' सभ एहि गोष्ठीक सक्रिय सदस्य रहथि। ओतबे नहि सरिसब अस्पतालक यशस्वी चिकित्सक कीर्ति नारायण कुमर एहि गोष्ठीकें आर्थिक सहायता द' ओ स्वयं भाग ल' गोष्ठीक सक्रियता बढ़ोंलन्हि। एहि गोष्ठीसँ जन सामान्यकें ई लाभ भेल जे विद्यापति पर्व की थिकैक तकर बोध भेलैक ओ अपन भाषाक प्रति अनुराग सेहो जगलैक। एकर क्षेत्र बहुत दूर-दूर तक छल। किरणजीक अनुसार ओ विकेन्द्रीत कार्यकें नीक मानैत छलाह। तैं भैरव स्थान, महरैल, उजान, आशी सुपौल मे संस्था संगठित कैल गेल जे अपन- अपन इलाकामे सप्ताह पर्वक कार्यक्रम चलबैत छल। आइ तक ओ विद्यापति गोष्ठी सक्रिय तँ नहि अछि किन्तु ओकर प्रभाव एखनहुँ अछि। जाहि कारणें विभिन्न संस्था स्थापना एहि परिसरमे भेल। जकर एकटा उदाहरण "साहित्यिकी" संस्था अछि जे बिना अनुदानकें सहायता लेने सैकड़ा सँ बेसी पोथीक प्रकाशन कयलक अछि। सरिसब-पाही परिसरक नजदीकी गामसभ मिला क' कतेको पुस्तकालय अछि जे मैथिलीक कार्यक्रम करैत अछि। हम कहब किरणजी द्वारा स्थापित विद्यापति गोष्ठी आइ निष्क्रिय भ' गेल अछि किन्तु ओकर प्रभाव एखनहुँ प्रभावमान अछि। जे महत्वपूर्ण रूपसँ विद्यापति गोष्ठीक स्मरण दिअबैत अछि।

एहि तरहें सरिसव-पाहीक विद्यापति-गोष्ठीकेँ मैथिली साहित्यक इतिहासमे केवल विद्यापति-स्मृति आयोजनक रूपमे परिभाषित करब एकर वास्तविक ऐतिहासिक महत्त्वकेँ संकुचित करब होयत। एकर मूल अवदान मैथिली भाषाक प्रति सामाजिक चेतना उत्पन्न करब, साहित्यिक सृजनकेँ सामाजिक प्रतिष्ठा देब, नव रचनाकार आ पाठकक निर्माण करब तथा साहित्यिक गतिविधिकेँ ग्रामीण समाज धरि विकेन्द्रित करबमे निहित छल। एहि समस्त प्रक्रियामे डॉ. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क भूमिका एकटा साहित्यकारक सीमा पार कऽ भाषिक चेतनाक सिद्धान्तकार, साहित्यिक संस्थानिर्माता आ सांस्कृतिक आन्दोलनक संगठकक रूप मे उभरैत अछि। अतः विद्यापति-गोष्ठी आ 'किरण'क अन्तर्सम्बन्ध मैथिली साहित्यक आधुनिक इतिहासमे परम्पराक पुनर्पाठ, भाषिक अस्मिताक निर्माण तथा साहित्यक सामाजिक आधार-विस्तारक एक महत्त्वपूर्ण अध्यायक रूपमे मूल्यांकित कएल जा सकैत अछि।

संदर्भ-सूची

1. झा, काञ्चीनाथ 'किरण'. भूमिका, जिजीविषा (कविता संग्रह)
2. संपादक – मिश्र, जगदीश , प्रकाशक- विद्यापति गोष्ठी, सरिसब-पाही, प्रकाशन वर्ष- 1982 ई.'।
3. श्रीनिवास शिवशंकर, झा केदारनाथ, कांचीनाथ झा 'किरण' रचना संचयन (2025), प्रकाशक- साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली'।
4. झा, काञ्चीनाथ 'किरण'. भूमिका, जिजीविषा (कविता संग्रह) संपादक – मिश्र, जगदीश, प्रकाशक- विद्यापति गोष्ठी, सरिसब-पाही, प्रकाशन वर्ष- 1982 ई.'।
5. झा, काञ्चीनाथ 'किरण'. भूमिका, जिजीविषा (कविता संग्रह) संपादक – मिश्र, जगदीश , प्रकाशक- विद्यापति गोष्ठी, सरिसब-पाही, प्रकाशन वर्ष- 1982 ई.'।
6. श्रीनिवास शिवशंकर, विश्लेषण (2022), प्रकाशक- सिद्धिरस्तु, नई दिल्ली '।

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

© 2026 डॉ अतुलेश्वर झा, this is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/